विषय : शिक्षा की नई चुनौतियाँ

शिक्षा क्षेत्र में आई चुनौतियाँ

आधुनिक मानव हर एक क्षेत्र में बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। आज के अवसर में वे अपनी ज्ञान के ज़रिए वो सब हासिल कर रहे हैं जो सौ साल पहले तक उसने सोचा ही नही होगा। नई तकनीकों की आविष्कार के साथ-साथ हम पुरानी तकनीकों की खामियों का हल भी निकाल रहे हैं। किसी विषय में ज्ञान प्राप्त करनेवाले आनेवाली पीढी को भी उस ज्ञान से परिचित कर लेना चाहिए। इसी अवसर पर शिक्षा का महत्व हमें समझ में आता है। अन्य क्षेत्रों के साथ-साथ शिक्षा क्षेत्र का भी समय के साथ परिवर्तन हुआ है। इस नई युग की शिक्षा प्रणाली लाभ के साथ-साथ अनेक चुनौतियाँ भी ले आती हैं।

आधुनिक युग को कंप्यूटर युग कहा जाता है क्योंकि आजकल ज़ादा से ज़ादा काम कंप्यूटर व उन्य मशीनों से होता है। ऐसी स्थिति में आजकल शिक्षा भी ओनलाईन हो चुकी है। कोविड काल में शुरु हुआ

ऑनलाईन शिक्षा रीती उसके बाद भी चला और आज भी चल रहा है। ये शिक्षा रीती ने बच्चों को मोबाईल एवं सामूहिक माध्यमों से ज्यादा परिचित किया और उनको उसकी लत लगने लगी। शिक्षा का परम उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना ही नही बल्कि देशप्रेमी, सहज स्वभाव वाले, ज्ञानी और निस्वार्थ नागरिक बनाना भी है। पर सामूहिक माध्यमों के बढोती ने शिक्षा क्षेत्र में एक नई चुनौती लाई है। बच्चों का ध्यान भटक रहा है और वे पढ़ाई में ज्यादा ध्यान नही दे रहे हैं। इसी कारणवश उनकी ज्ञान प्राप्त करने की या पढ़ाई करने की इच्छा खतम हो रही है। इसका नियंत्रण माता-पिता, गुरुजन और खुद छात्रों को करना होगा। छात्रों को समझना होगा कि समय मूल्यवान है और उन्हें अपना कार्य निभाना है।

आजकल के छात्रों के मन में ये सवाल उठता है कि "पढाई क्यों करें?" तो माँ-बाप या अन्य लोग उन्हें ये बताते हैं कि नौकरी लगने केलिए पढाई करो। वे ये भी कहते हैं कि अच्छी नौकरी लगने पर जीवन सुखी और शांतिदायक होगा। काफी बच्चे सिर्फ नौकरी

लगने केलिए पढाई करते है या ज्ञान पाते है। पर उस दौरान उन्हें जो मूल्य प्राप्त करने होते है वे छूट जाते है। हमारी शिक्षा व्यवस्था भी कुछ इस प्रकार से बनाई गई है जिसमें छात्रों की मानसिक व नैतिक विकास केलिए समय नही बचता। खास करके भारतीय शिक्षा व्यवस्था में बच्चों को पढाई के अलावा कुछ करने केलिए जादा वक्त ही नही मिलता। सिर्फ किताबों का ज्ञान प्राप्त करके अच्छा नागरिक नही बन सकता। उसकेलिए छात्रों को दुनिया देखनी होगी, अखबार पढनी होगी - ऐसे बहुत कार्य करने होंगे जो नामुमकिन जैसा हो गया है। बच्चों का नैतिक विकास करनेकेलिए शिक्षा संस्थानों व सरकार को अलग - अलग योजनाऐं बनानी होगी और उन्हें हर बच्चों तक पहुँचाना होगा।

शिक्षा क्षेत्र में यह भी एक चुनौती है कि अच्छे अध्यापक देश छोडकर ~~विदेश~~ विदेशों और अन्य मुल्कों में जा रहे है। उनके जाने का बहुत से कारण होंगे जैसे कम शुल्क। अब महँगाई के चलते अगर उनको अच्छी शुल्क भी न मिले तो वे अच्छे अवसर के खोज में निकल पडते है और यहाँ की बच्चों को अच्छी

शिक्षा नष्ट हो जाती है। कई सारे ~~ऐसे~~ अध्यापक ऐसे भी हैं जो शिक्षा क्षेत्र को छोडकर अन्य व क्षेत्रों में काम करने केलिए मजबूर हो जाते हैं। ये भी है कि आजकल के कई छात्र ~~अ~~ शिक्षकों को नीचा मानकर उनके अपमान करते हैं। ये मूल्यों की कमी को दर्शाती ~~है~~ हैं।

कई सारे बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करने केलिए विदेश चले जाते हैं। वे अपने देश में रुकना ही नही चाहते हैं। इसके कई कारण हो सकती हैं जैसे की बेरोजगारी, अच्छे अवसर प्राप्त न होना आदि। ये भी हमारी शिक्षा क्षेत्र में हो रही एक चुनौती है और इसे सुधारने केलिए हमारी शिक्षा - रीती को अच्छा बनाना होगा। जिस भारत के नलंदा, तक्षशिला जैसी संस्थाओं में पढने केलिए बाहर से बच्चे आते थे आजकल उसी भारत के छात्र शिक्षा और नौकरी के तलाश में बाहर जा रहे हैं।

शिक्षा क्षेत्र की ~~उन्नति~~ उन्नती में बेरोजगारी भी एक समस्या है। कृत्रिम ~~बु~~ बुद्धि की आने के बाद तो और भी लोग बेरोजगार होने की संभावनाएं हैं। ये भी सच है कि काफी सारे बच्चों को उद्योग - केंद्रित शिक्षा नही मिलती जिससे उन्हें ये नही पता चलता कि उनके पास

जो शिक्षा है उससे करना क्या है।

~~बह~~ भारत के ज्यादातर बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं। और उन्हें अच्छी सुविधाएं मिलना मुश्किल है। खास करके गाँवों में जो विद्यालय हैं उनकी स्थिति कुछ खास अच्छी नही है। पहले की ज़माने में ~~अ~~ - अन्य विद्यालय - जो सरकारी नही है - वहाँ की सुविधाएं अच्छी होती थी और सरकारी स्कूलों की स्थिती अच्छी नही थी। पर आजकल सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाया जा रहा है जो काबिल-ऐ-तारीफ है क्योंकि अब गरीब के बच्चे भी अच्छी शिक्षा ले सकते हैं।

~~बव~~ वक्त के साथ-साथ जो बदलाव पुस्तकों में या सुविधाओं में ~~बह~~ आने चाहिए वो पूरी तरह से नही हो रहा है। आज भी बच्चे ~~बह~~ वही किताबों से पढाई करते हैं जो दस साल पहले की बच्चों ने भी किए थे। इन दस सालों में दुनिया में जो भी परिवर्तन आए हैं ~~उर~~ उनकी हिसाब से किताबें बदलनी चाहिए जो एक बडी चुनौती है। कई बार ऐसा हो जाता है कि तकनीकें और शास्त्र आए-दिन बदलते। इसके हिसाब की शिक्षा देना जरूरी है। कम्पूटर युग की समस्याओं के बारे

में बच्चों को ज्ञात कराना ~~एक~~ बहुत जरूरी है।

शिक्षा क्षेत्र में आज भी आरक्षण चल रहा है। इसके कारण कई सारे योग्य बच्चे पिछडे रह जाते है। कई सारे ऐसे लोग आगे आ जाते है जो योग्य नही होंगे। इसकी ~~वजह~~ वजह से अच्छी शिक्षा उन्हें मिल जाते है जो इनका अच्छे से उपयोग भी नही करेंगे और वो व्यर्थ हो जाती ही। प्रवेश परीक्षाओं केलिए एक ऐसी चुनाव व्यवस्था बनाना होगा जो छात्रों की एक समान परीक्षा ले। और आरक्षण योग्य लोगों को अपनी ज्ञान के बल पर मिलना चाहिए। सर्वोत्तम शिक्षा सभी तक पहुँचाना एक समस्या है। देश की कोने - कोने तक ~~अच्छी~~ अच्छे अध्यापक द्वारा लिए गए अच्छे क्लास अंतर्जाल के माध्यम से ~~ही~~ पहुँचा सकते है।

आजकल शिक्षा क्षेत्र ~~क्षेत्र~~ में सबसे बडी विपत्ती सामूहिक माध्यम ही है। बच्चों को इसका लत लगने से वे पढाई को छोडकर उसकी तरफ खींच चले जाते है। इसका कारण शायद उनके परेशानियाँ होंगे और सामूहिक माध्यमों से उनको आराम मिलता होगा। इसी दौरान हमें छात्रों की मानसिक स्थिति को भी समझनी होगी।

कई सारे स्कूलों में खेल - कूद केलिए समय नही दिया जाता और बच्चों पर हमेशा परीक्षा एवं पढाई की चिंता होती है जो उन्हें हताशा जैसी बीमारियों का शिकार भी बना देते है। शिक्षा के माध्यम से बच्चों तक शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ज्ञान पहुँचाना अगला चुनौती है। आए दिन हम अखबार में बच्चों की खुदकुशी करने की पीड़ा - जनक खबर पढते है जिसे रोकना बहुत जरूरी है।

शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जिसपर बहुत सारे लोगों का प्रतीक्षा है। छात्रों के, उनके माँ - बाँप के, गुरुओं के आदि। आजके विद्यार्थी कल के नागरिक है जिसपर पूरे देश की प्रतीक्षा है। शिक्षा क्षेत्र में आई चुनौतियों का समय से हल निकालना अत्यंत अवश्यक है। अगर ऐसा नही किया गया तो वो पूरे देश की व्यवस्था बिगाड सकती है। इसलिए हमें नए युग की चुनौतियाँ समझनी होगी और उनका जल्द - से - जल्द हल करना होगा। बच्चों को शिक्षा की महत्व का परिचय देना होगा जिससे वे ज्ञानी और अच्छे नागरिक बन सके।